NALANDA OPEN UNIVERSITY

Course : M.A Psychology, Part-I

Paper : Paper-II

Prepared by : Dr. (Prof.) Prabha Shukla
Retd. Professor of Psychology, Patna University and
Chief Co-ordinator, School of Social Sciences,
Nalanda Open University

Topic : मौखिक सीखना (Verbal Learning)

मौखिक सीखना

(Verbal Learning)

3.1 उद्देश्य (Objective)

यह इकाई सीखने की मौखिक विधि पर प्रकाश डालता है। इसे पढ़ने से निम्नलिखित बातें स्पष्ट हैं –

(i) मौखिक शिक्षण एक महत्वपूर्ण विधि है।

(ii) मौखिक शिक्षण के कारण मनुष्य में उच्च शिक्षण संभव है।

(iii) संज्ञानात्मक मौखिक शिक्षण में मानव मस्तिष्क को कम्प्यूटर की तरह माना गया है।

(iv) मौखिक शिक्षण की महत्वपूर्ण विधियाँ हैं।

(v) मौखिक शिक्षण के स्तरीय विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सीखने के तीन महत्वपूर्ण स्तर होते हैं- अनुक्रिया से सीखना, उद्दीपक से सीखना और सहचर्य से सीखना।

(vi) सीखने में सामिप्राय सीखना और प्रासंगिक सीखना भी महत्वपूर्ण है।

3.2 परिचय (Introduction)

सीखने की प्रक्रिया लगातार चलने वाली क्रिया है। इसमें मौखिक सीखना मानव शिक्षण से जुटा है। मनुष्य इस विधि से शब्दों, चिह्नों और अंकों को सीखता है। इससे ही मनुष्यों में उच्च शिक्षा और जटिल समस्याओं को समझना संभव होता है। यह एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है। साथ ही यह आधुनिक युग के नवीन आविष्कारों और प्रगति का आधार भी है। यह विधि शिक्षा मनोविज्ञान (Educational Psychology) के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

3.3 अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definition)

मौखिक सीखना (Verbal Learning) : एक छोटा बालक मौखिक शिक्षण के द्वारा ही बोलना, पढ़ना, लिखना जैसे व्यवहारों को सीखता है। मौखिक शिक्षण के कारण ही मनुष्य अन्य प्राणियों से विशिष्ट है। संज्ञानात्मक शिक्षण (Cognitive Learning) मौखिक सीखने की प्रक्रिया को एक पूर्ण प्रक्रिया मानता है। अर्थात किसी समस्या के सामने आने पर मानव मस्तिष्क में उसे सुलझाने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इस मानसिक प्रक्रिया में समस्या को समझना और उसके अलग-अलग उपाय खोजना शामिल है। ऐसे में मौखिक शिक्षण महत्वपूर्ण होता है।

जन्म के समय से बच्चे विभिन्न अर्थहीन आवाज निकालते हैं। धीरे-धीरे वह भाषा और शब्दों का अर्थ समझने लगता है। इस तरह धीरे-धीरे बच्चों में मौखिक शिक्षण शुरू होती है। इसी क्रम में वह बोलने के अलावा अक्षरों, चिह्नों और अंकों को सीखते हैं। संज्ञानात्मक शिक्षण में मौखिक रूप से सीखने का महंत्वपूर्ण स्थान है। मानव के मस्तिष्क में सभी बातें या सूचनाएँ इकट्ठी होती हैं। फिर मस्तिष्क मौखिक शिक्षण के द्वारा सीखी गई बातों के आधार पर उन्हें क्रमबद्ध (Systmetic) तरीके से व्यवस्थित करता है। इसे व्यवस्थित करने में मौखिक रूप से सीखे गए शब्दों, भाषा, घटनाओं, चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इसके बाद दिमाग की सभी बातों को सिलसिलेवार तरीके से भाषा में बोलकर व्यक्त किया जाता है। अर्थात संज्ञानात्मक रूप से सीखने में मानव मस्तिष्क कम्प्यूटर की तरह काम करता है। मस्तिष्क में सभी बातें जाती (Input) है। फिर वहाँ मौखिक शिक्षण के आधार पर प्रक्रिया (Process) होती है।

इस दौरान व्यक्ति उन्हें अपनी जरूरत के अनुसार बदलता या व्यवस्थित करता है। कुछ बातों को जोड़ता या हटाता है। इसके बाद वह उन्हें व्यक्त (Output) करता है। इस मौखिक शिक्षण की सहायता से मनुष्य अनेक जटिल मानसिक क्रियाएँ करता है। इसकी सहायता से ही मानव मस्तिष्क जटिल समस्याओं को सुलझाने में सक्षम होता है।

कोफर के अनुसार- व्यक्ति अभ्यास के द्वारा मौखिक रूप से सीखे बातों को अलग-अलग प्रकार से व्यक्त करना सीखता है। इस तरह से वह अपनी बातों, रूचि आदि को समझाना या व्यक्त करना सीखता है। अर्थात अपनी बातों को मौखिक रूप में व्यक्त करना सीखता है। (The term verbal learning denotes a field of inquiry in which the focus of interest lies in the phenomena and process by which individuals come, through practice, to link two verbal items together, to learn the sequence in which a set of verbal items occurs, to differentiate between verbal items or to recall a set of items without regard for the order in which they occured originally." Cofer : Properties of verbal material and verbal learning. In Riggs & K Lings. Experimental Psychology, 1984 P. 848)

3.4 विशेषताएँ (Characteristics)

इस परिभाषा से निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं-

1. मौखिक सीखना एक विशेष क्षेत्र (Field) से संबंधित है।
2. यह एक प्रक्रिया (Process) है, जिसमें कुछ विशेष तथ्य (Phenomena) काम करते हैं।
3. यह शिक्षण प्रक्रिया अभ्यास द्वारा सीखी जाती है।
4. इसे क्रमबद्ध रूप से (Sequence) व्यक्त करना सीखना पड़ता है।
5. एक मौखिक शिक्षण का प्रयोग नई परिस्थिति में करना। अर्थात पुरानी सीखी बातों का नया प्रयोग करना।

3.5 मौखिक शिक्षण की विधियाँ (Methods of Verbal Learning)

मौखिक शिक्षण की प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित है। मौखिक शिक्षण पर इनका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। विभिन्न प्रयोगों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि मौखिक शिक्षण में ये विधियाँ प्रयोग में आती है-

3.5.1. मुक्तरूप से सीखना (Method of Free Recall Learning)

यह मौखिक शिक्षण की एक आसान विधि है। जब किसी विषय को सीखने के बाद अपनी इच्छा के अनुसार व्यक्त किया या याद किया जाए तो इसे मुक्त रूप से सीखना कहते हैं। इसमें यह जरूरी नहीं है कि सीखे हुए विषय वस्तु को एकदम उसी प्रकार से या उसी क्रम में याद रखा जाए। इस विधि से सीखने के बाद, व्यक्त करते समय (Recall) सीखी बातों को अपनी इच्छा के अनुसार व्यक्त करने की स्वतंत्रता रहती है। परीक्षा के दौरान किसी प्रश्न का उत्तर अपने शब्दों में देना इसका एक अच्छा उदाहरण है (Subjective Answer)।

3.5.2 क्रमिक सीखना (Method of Serial Learning)

जब मौखिक शिक्षण के बाद सीखे हुए विषय को उसी क्रम में याद (Recall) किया जाता है, जिस क्रम में दिया गया था, तब इसे क्रमिक सीखना कहा जाता है। जैसे कि हिन्दी के वर्णों को या गणित की संख्याओं एक क्रम में ही याद किया जाता है। (उदाहरण क ख ग घ ङ)। इस विधि का उल्लेख सबसे पहले इबिंगहॉस (Ebbinghaus) ने किया था। उन्होंने निरर्थक शब्दों का एक लिस्ट तैयार किया। ये शब्द एक क्रम में लिखे गए थे। इसका प्रयोग उन्होंने एक प्रयोज्य पर किया। प्रयोज्य को यह लिस्ट दिखाया। इसमें लिखे गए शब्दों को उन्होंने क्रम में दिखाया और अंत में उन्हें दोहराने या याद करके सुनाने को कहा। साथ में यह निर्देश भी दिया कि शब्दों को सही क्रम में ही याद करना है। लिस्ट बार-बार तब तक दिखाया जाता रहा, जब तक प्रयोग्य ने पूरा लिस्ट क्रम में याद कर लिया। ऐसे सीखने में ज्यादा प्रयास लगता है।

3.5.3 अनुबोधन और पूर्वाभास विधि (Method of Prompting and Anticipation)

इसे क्रमिक रूप से सीखने की विधि का बदला रूप कहा जा सकता है। इस विधि में शुरू की बातें बताकर आगे की बातों को याद (Recall) करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उदाहरण के लिए किसी जाने-पहचाने गाना की शुरू की पंक्तियाँ सुनाकर आगे की पंक्तियाँ याद करने के लिए प्रोत्साहित करना या बच्चों द्वारा अपनी पढ़ाई भूलने पर शुरू की बातें याद दिलाना आदि। इसे प्रयोग द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है। इसमें प्रयोज्य को शब्दों का एक लिस्ट क्रमवार दिखाया जाता है। फिर पहला शब्द दिखाकर दूसरे शब्द को याद करने कहा जाता है।

3.5.4. युग्मित सहचर विधि (Method of Paired Association)

मौखिक शिक्षण की यह विधि संबंधों से जुटी रहती है। जिसमें किसी एक बात को याद करने से दूसरी बात याद आ जाती है। जैसे किसी शहर का नाम याद आने पर वहाँ रहने वाले मित्रों को याद करना या अपनी कक्षा की बातों के साथ सहपाठियों को याद करना आदि। इसके लिए किये जाने वाले प्रयोगों में प्रयोज्य को ऐसे शब्दों का लिस्ट दिखाया जाता है जो जोड़े के रूप में रहता है। इन्हें प्रयोज्य द्वारा याद कर लेले के बाद प्रत्येक जोड़े का पहला शब्द दिखाया जाता है, फलत: दूसरा शब्द प्रयोज्य को यादकर आ जाता है। यह विधि स्पष्ट करती है कि सीखने की प्रक्रिया को किसी बात से जोड़ कर याद करना सरल हो जाता है।

3.5.5 पहचान कर सीखने की विधि (Method of Recognition Learning)

मौखिक शिक्षण की इस विधि में पहले सीखी गई बातों को पहचानना होता है। इस विधि का प्रयोग आजकल अनेक परीक्षा में किया जाता है। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा में एक प्रश्न के च़ार संभावित उत्तरों में से सही उत्तर पर चिह्न (Objective Type Question and Answer) लगाना होता है। प्रयोगशाला में भी इस विधि को प्रयोग में लाया जाता है। पहले प्रयोज्य को कुछ शब्द याद करवाए जाते हैं, फिर उसमें कुछ नए शब्द मिला दिया जाता है। इसके बाद प्रयोज्य को लिस्ट दिखाया जाता है और याद किए हुए शब्दों को पहचानने कहा जाता है।

3.6 मौखिक शिक्षण को स्तरीय विश्लेषण (Stage Analysis of Verbal Learning)

मौखिक शिक्षण विभिन्न स्तरों पर होता है। मनोवैज्ञानिकों ने भी मौखिक शिक्षण का विश्लेषण अलग-अलग स्तर में किया है। अंडरवुड और सूल्ज (Underwood & Sultz, 1960) तथा अन्य कई मनोवैज्ञानिकों ने इस पर प्रकाश डाला है। विश्लेषण के आधार पर तीन तत्वों को महत्वपूर्ण माना गया है। ये तीन तत्व निम्नलिखित हैं-

3.6.1 अनुक्रिया से सीखना (Response Learning)

सीखने की प्रक्रिया उद्दीपक-अनुक्रिया (Stimulus-Response) से होता है। सीखने के विभिन्न सिद्धांत भी इसे स्पष्ट करते हैं। सीखने के दौरान, सीखे जाने वाला विषय उद्दीपक का काम करता है और प्राणी द्वारा किया जाने वाला व्यवहार अनुक्रिया कहलाता है। किसी उद्दीपक को देखकर कैसी अनुक्रिया करनी है यह संबंध (Association) बनाकर सीखा जाता है। अत: इसे साहचर्य सीखना (Associative Learning) भी कहा गया है। ये साहचर्य या संबंध पहले सीखे गए विषय के आधार पर इसे दो हिस्सों में बाँटा गया है। जो निम्नलिखित हैं-

(i) अनुक्रिया का संगठन (Response Intigration)

(ii) सूची विभेदन (List Differentiation)

सीखने के दौरान व्यक्ति अक्सर नये विषय के संपर्क में आते हैं। तब इस नये विषय को याद रखने के लिए वह उसे संगठित करता है। अगर यह विषय बिलकुल नया है तब उन अनुक्रियाओं को संगठित रूप से याद किया जाता है। जैसे किसी कार के नम्बर को याद रखना है तब वह निरर्थक पद (उदाहरण-BQR) संगठित रूप में याद किया जाता है। इसी प्रकार अर्थयुक्त शब्दों को याद रखने में भी संगठन का प्रभाव पड़ता है। जैसे CAT को अंग्रेजी के अलग-अलग अक्षरों में नहीं पढ़ कर संगठित रूप में ''कैट'' पढ़ा जाता है। यह संगठन पहले सीखे गए अंग्रेजी ज्ञान के कारण होता है। संगठन अनुक्रिया के लिए विभेदीकरण भी महत्वपूर्ण है। संगठन द्वारा अनुक्रिया से एक बात स्पष्ट होती है कि इसमें विभेदन या

अंतर करना भी महत्वपूर्ण है। पहले से सीखी अनेक बातों में से नई सीखी बात को अंतर द्वारा पहचानना पड़ता है। यह सूची विभेदन (List Differentiation) कहलाता है। पहले के अंग्रेजी ज्ञान से C (सी) A (ए) T (टी) को अलग करना सूची विभेदीकरण है। इसके बाद इसे संगठित रूप से एक नए शब्द के रूप में सीखा जाता है।

3.6.2 उद्दीपक से सीखना (Stimulus Learning)

मौखिक सीखने में उद्दीपक (Stimulus) का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण है। किसी उद्दीपक के सामने आने पर सीखने की प्रक्रिया शुरू होती है। इसके अतिरिक्त किसी एक उद्दीपक के साथ (Association) सीखने की प्रक्रिया होती है। बाद में किसी अन्य शिक्षण के समय पहले के उद्दीपन का साहचर्य (Association) नए विषय को सीखने में मदद करता है। साथ ही दोनों उद्दीपनों में अंतर करना भी सीखता है। इस तरह से सीखने में उद्दीपक का चयन Selection of Stimulus) करना पड़ता है।

3.6.3 साहचर्य से सीखना (Associative Learning)

मौखिक सीखने की प्रक्रिया में साहचर्य का महत्वपूर्ण स्थान है। पहले सीखे हुए मौखिक उद्दीपकों की सहायता से नई अनुक्रियाओं (Response) को सीखने में मदद मिलती है। इसे साहचर्य से सीखना कहा जाता है। इसे S–R शिक्षण कहा जाता है। सीखने की यह प्रक्रिया विपरित भी हो सकती है। अर्थात R–S सीखना। इस संबंध में मनोवैज्ञानिकों ने अलग-अलग मत दिये हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने पहले अनुक्रिया विषय (R) को देखकर उद्दीपक विषय (S) को सीखने की प्रक्रिया (S–R) को सीखने की कमजोर विधि माना है। परन्तु कुछ ने इसे समान महत्व दिया है।

3.7 सामिप्राय तथा प्रासंगिक सीखना (Intentional Learning and Incidental Learning)

मौखिक सीखने में बहुत सी बातें चाहकर या अपनी इच्छा से सीखी जाती है। इसमें सीखने वाले की इच्छा, अभिरूचि या आवश्यकता जुटी रहती है। जैसे चित्रकारिता करना सीखना इच्छा और अभिरूचि को दर्शाता है। अपनी कक्षा की पढ़ाई को सीखना आवश्यकता के अनुसार होता है। इस तरह का सीखना सामिप्राय (Intentional) कहलाता है। इससे उद्देश्य पूरा होता है। इसलिए इसे उद्देश्यपूर्ण सीखना (Purposive Learning) भी कहा जाता है। बहुत बार बहुत सी बातें अपने आप भी सीख लिया जाता है। इसके साथ इच्छा या अभिरूचि नहीं जुटी होती है। जैसे पानी में गिरने पर हाथ-पैर चलाने से तैरना सीख जाना या किसी रास्ते पर आते-जाते दुकानों का नाम सीख जाना प्रासंगिक सीखने (Incidental Learning) के उदाहरण है।

3.8 सारांश (Summring-Up)

सीखने की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। सीखने की प्रक्रिया विभिन्न विधियों से होती है। जिसमें मौखिक विधि महत्वपूर्ण है। यह भाषा शब्दों, अंकों, चिह्नों को सीखने में मदद करती है। यह मानव में सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। मौखिक शिक्षण की भी कुछ प्रमुख विधिया हैं- मुक्त रूप से सीखना, क्रमिक सीखना, अनुबोधन और पूर्वाभास विधि से सीखना, युग्मित सहचर विधि और पहचानकर सीखने की विधि।

विश्लेषण करने पर मौखिक शिक्षण के विभिन्न स्तर स्पष्ट होते हैं। जो बातें हैं कि मौखिक सीखना निम्नलिखित स्तर पर होता है- अनुक्रिया से सीखना, उद्दीपक से सीखना और साहचर्य से सीखना। इसके साथ ही स्पष्ट होता है कि मौखिक शिक्षण से संभव है। पर बिना प्रयास के या अचानक भी मौखिक शिक्षण होना संभव है।

3.9 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

1. मानव शिक्षण को प्रभावित करने वाली महत्वपूर्ण शिक्षण विधि क्या है? परिभाषा के साथ विशेषताएँ बताएँ।

   Explain Effective Learning method in human being. Give difinition and explain its characterstics.

2. मौखिक शिक्षण विधि का अर्थ स्पष्ट करें। साथ ही इसकी प्रमुख विधियों का वर्णन करें।

   Explain the meaning of verbal learning. What are various methods of verbal learning.

3. मौखिक शिक्षण विधि क्या है? इसकी विशेषताएँ लिखिए। इसके स्तरीय विश्लेषण की विवेचना कीजिए।

   What is verbal learning? Explain its characteristics and stage analysis.

4. मौखिक शिक्षण की विधियाँ बतलाएँ। साथ ही स्तरीय विश्लेषण के विभिन्न स्तर स्पष्ट करें।

   Explain methods of verbal learning. Explain different stages of stage analysis.

5. संक्षिप्त टिप्पणी लिखें (Short Notes)

   (i) क्रमिक सीखना विधि (Method of Serial Learning

   (ii) साहचर्य से सीखना (Associative Learning)